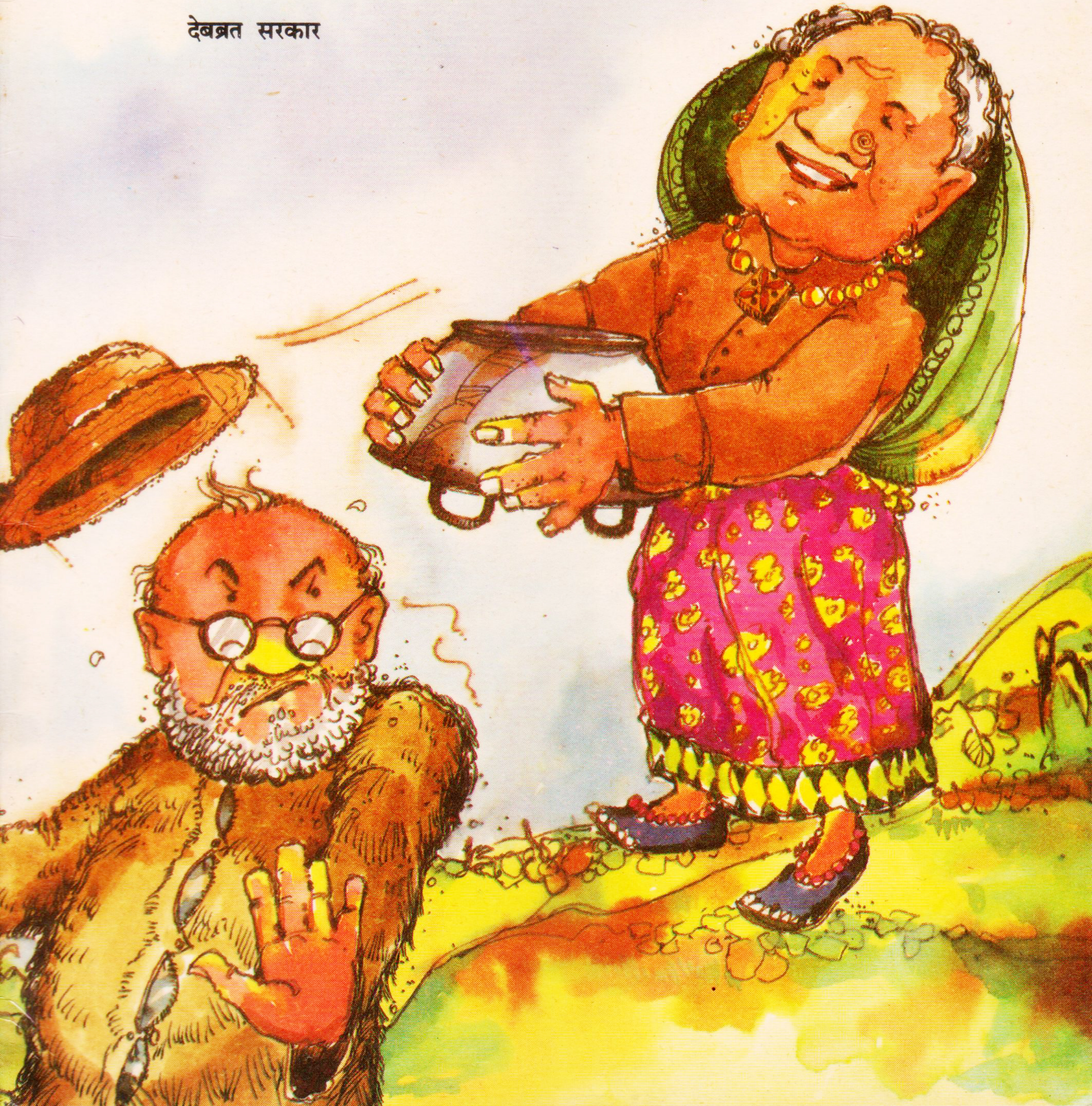
NEHRU BAL PUSTAKALAYA

कहानी एक बुढ़िया की

मार्गरेट भट्टी

चित्रकार

देबव्रत सरकार





1990 (शक 1912)

रु. 8.00

Little Old Woman (*Hindi*)

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित।

नेहरू बाल पुस्तकालय

कहानी एक बुढ़िया की

मार्गरेट भट्टी

चित्रकार

देबब्रत सरकार

अनुवाद

रमेश बक्षी



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



यह कहानी है एक बूढ़े आदमी और बुढ़िया की। एक दिन बूढ़े आदमी ने कहा, ''मैं पहाड़ उतरकर जाना चाहता हूं और भेड़ें खरीदकर लाना चाहता हूं।'' यह सुनकर बुढ़िया साथ ले जाने का सामान बांधने की बात सोचकर परेशान होने लगी, ''यह आदमी कभी घर छोड़कर नहीं गया है। और अब यह अपने बूढ़े लट्टू पर बैठकर पूरे बारह दिन के सफर पर जायेगा... !''

''चांवल, आटा, चाय, चीनी...'' वह सोचने लगी, ''प्याज, आलू, घी, तेल, मसाले, नमक...''





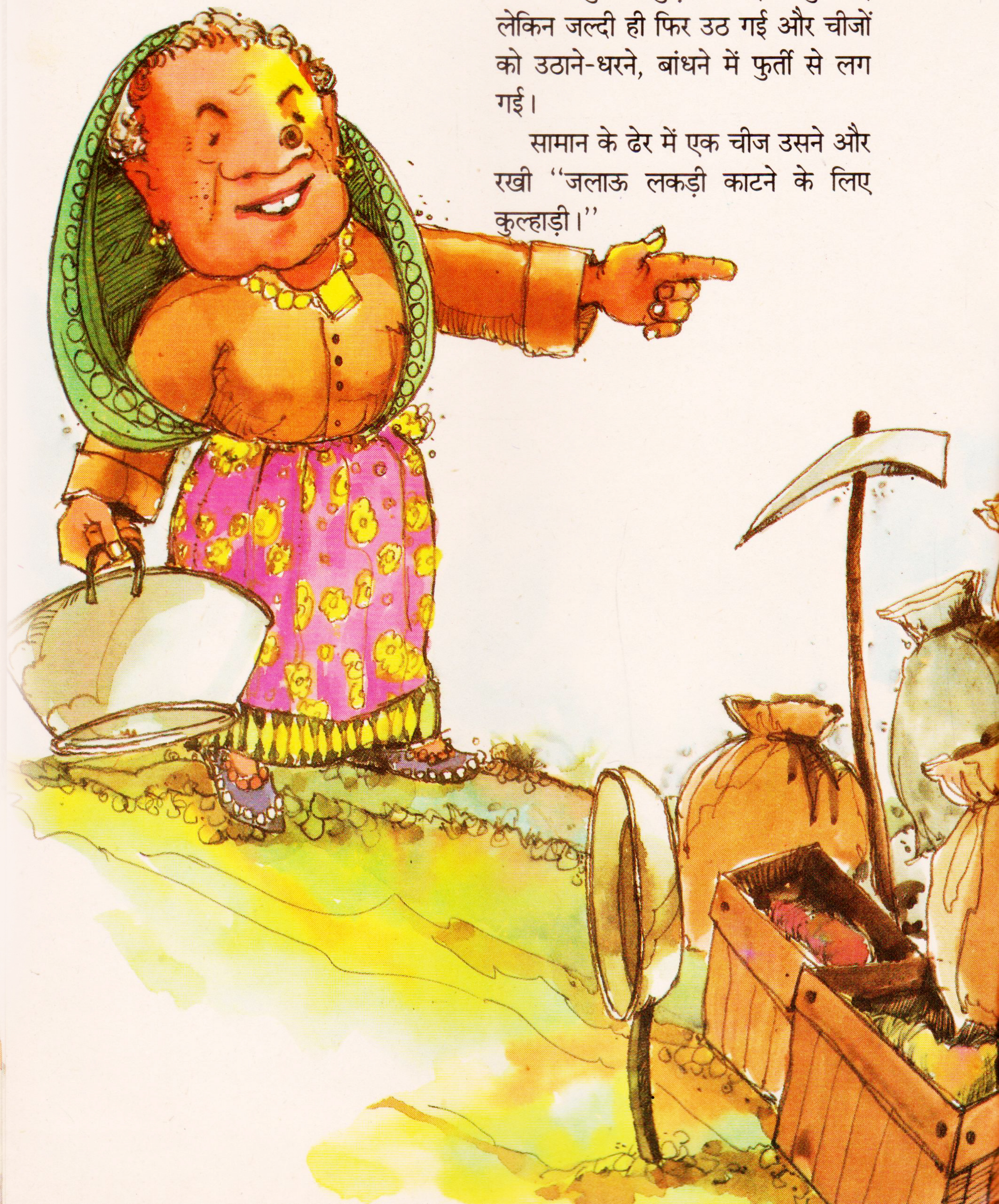
वह रात में भी जगकर झोपड़ी के बीच इकट्ठा किये गये सामान में और भी चीजें रखने लगी।

अलाव के पास वाली अपनी जगह से बूढ़े आदमी ने डांटा, ''अब मुझे सोने भी दोगी या नहीं?''



बात सुनकर बुढ़िया रजाई में घुस गई लेकिन जल्दी ही फिर उठ गई और चीजों को उठाने-धरने, बांधने में फुर्ती से लग गई।

सामान के ढेर में एक चीज उसने और रखी ''जलाऊ लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी।''



तब बूढ़े ने कांपती आवाज़ में कहा, "या फिर काले हिमालयी भालू से लड़ने के लिए...।"

बुढ़िया बोली, "हूं, चाचा जिगमे की तरह, जो पहाड़ उतरकर भेड़ें खरीदने गये थे तो भालू ने उनकी छाती पर चढ़कर पंजों से उन्हें नोच डाला था।"

बात सुनकर बूढ़े आदमी की नींद ही उड़ गई। वह बोला, "शायद मुझे जाना नहीं चाहिए।"





''बकवास ! अरे तुम भेड़ की खाल से बनी जैकेट के नीचे रोटी सेंकने का लोहे का तवा कवच की तरह पट्टे से बांध सकते हो।''

बूढ़ा बोला, ''क्या तुम्हें अपने चचेरे भाई दोरजी की बात याद है जो पहाड़ उतरकर भेड़ें खरीदने गया था और लुढ़कती हुई बर्फानी चट्टान से कुचल कर मर गया था।''





"तो डरने की क्या बात है। तुम अपने सिर पर यह लोहे का पतीला बांध सकते हो और साथ में एक फावड़ा भी ले जाओ कि बर्फ खोद सको।"

जब बूढ़े आदमी के जाने का दिन आ गया तो सारा सामान टट्टू पर लादा गया। बूढ़े आदमी ने अपने एक कंधे पर कुल्हाड़ी रख ली और दूसरे पर फावड़ा। छाती पर तवा बांध लिया और सिर पर पतीला, जिससे उसके कान भी



ढंक गये थे। पहाड़ के रास्ते से उतरते उसे ठीक से दिखाई दे रहा था। वजन के भार से टट्टू और उन दोनों के पैर डगमगा रहे थे। पहाड़ी रास्ते पर टट्टू को ले जाते वह पतीले के किनारे से नीचे झांककर देखता जा रहा था।

कोई आधा मील चले होंगे कि किसी के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी, ''रुको! रुको!'' बुढ़िया उनके पीछे दौड़ती आ रही थी। पास आकर हाँफते-हाँफते वह बोली, ''यह चकमक, आग जलाने का पत्थर रह गया था। इसकी जरूरत पड़ेगी। और यह छाता भी रखो। दर्रे के पास हमेशा बारिश होती रहती है। कहीं भीग गये तो जम ही जाओगे।''



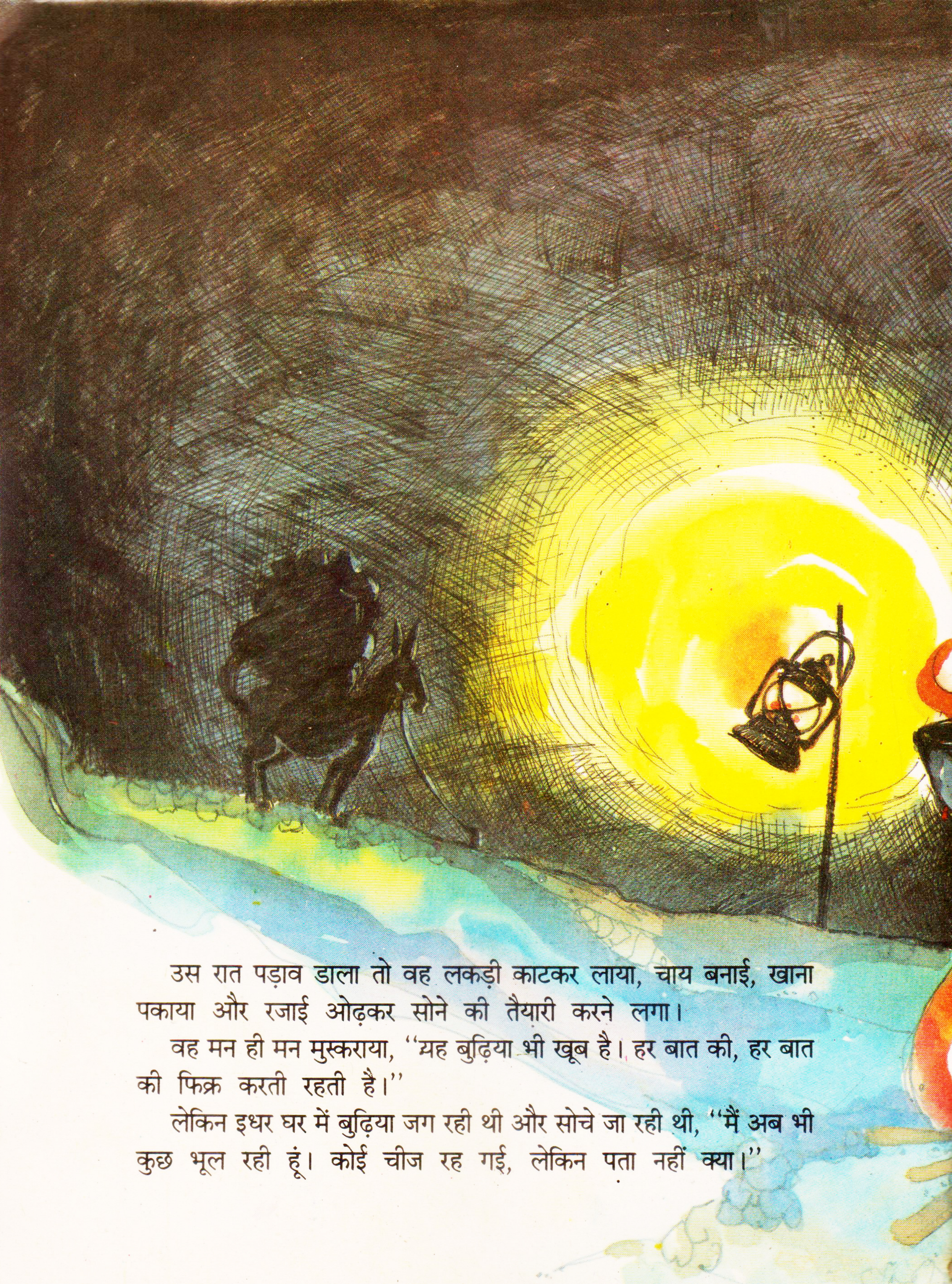


बुढ़िया ने छाता उसके कालर के पीछे लटका दिया, "मैं अब भी कुछ भूल रही हूं लेकिन पता नहीं कौन-सी चीज है वह?"

"अच्छा हो कि तुम्हें याद ही न आये", बूढ़े ने अपने पतीले के कनटोपे के अंदर से कहा, "कोई और सामान अगर तुमने दे दिया तो मैं मर ही जाऊंगा।"

"तो ठीक है जाओ। हाँ, दर्रे के पास पर्वत की देवी को नमक का प्रसाद जरूर चढ़ा देना। ऐसा नहीं किया तो वे गुस्सा हो जायेंगी।"





उस रात पड़ाव डाला तो वह लकड़ी काटकर लाया, चाय बनाई, खाना पकाया और रजाई ओढ़कर सोने की तैयारी करने लगा।

वह मन ही मन मुस्कराया, ''यह बुढ़िया भी खूब है। हर बात की, हर बात की फिक्र करती रहती है।''

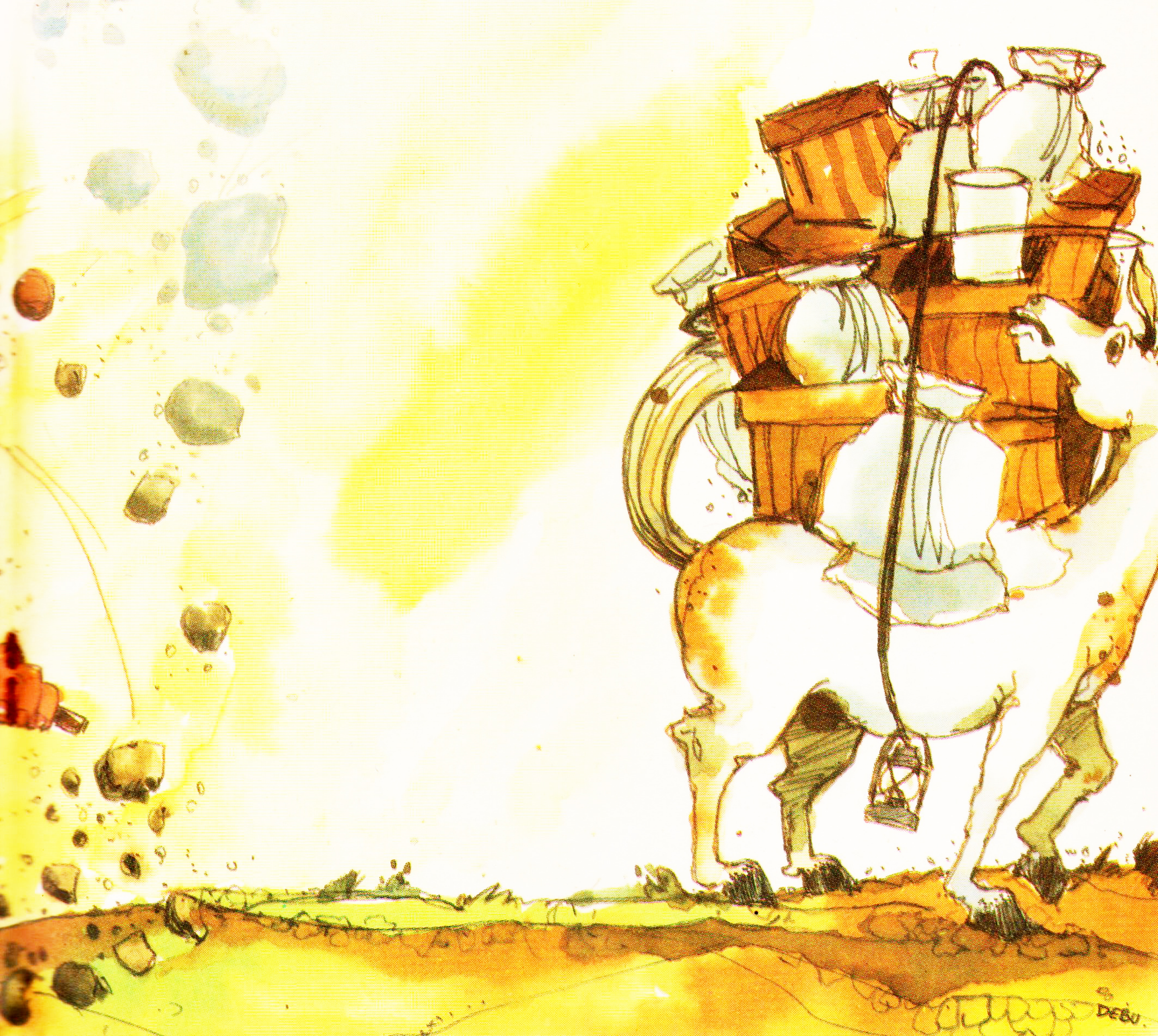
लेकिन इधर घर में बुढ़िया जग रही थी और सोचे जा रही थी, ''मैं अब भी कुछ भूल रही हूं। कोई चीज रह गई, लेकिन पता नहीं क्या।''





दूसरे दिन उसके टट्टू ने रास्ता पार किया ही था कि उसके पीछे बर्फ की लुढ़कती हुई चट्टान पास आ गिरी। औफ़, कीचड़ भरे बर्फ के टुकड़े और छोटे-बड़े तरह-तरह के पत्थर।

ठक्, पट्, खट्, गड़म-गड़म, ढूं-ढ़ां! पत्थर लुढ़कते चले आ रहे थे और बूढ़े आदमी के सिर पर बंधे पतीले से टकराकर टनटना रहे थे। उसने बड़ी आसानी से अपने आपको बाहर निकाल लिया और बगैर चोट खाये आगे बढ़ गया।







अब तीसरा दिन आ गया और उसे मिला हिमालय का भालू। गुर्र-गुर्र-गुर्र ! वह गुर्राया और उसकी तरफ लपका।

बूढ़े आदमी का पसीना छूट गया। उसने कुल्हाड़ी से इधर-उधर वार करके उसे डराना चाहा। लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। उसे लगा कि उसके हाथ रबर जैसे हो गए हैं। भारी वजन के कारण भालू ने आसानी से उसे पीठ के बल

नीचे गिरा दिया।

बूढ़े आदमी ने सोचा, ''अब मेरा वैसा ही अंत होगा जैसा चाचा जिगमे का हुआ था।'' वह बेहोश होने लगा, ''अलविदा, अलविदा बुढ़िया!''





लेकिन भालू उसे एक बार भी काट नहीं पाया। बुढ़िया द्वारा दिये गये तवे पर पंजे मारने से भालू के नाखून और सिर पर टिके पतीले पर झपटने से उसके दांत टूट गये और हुआ यह कि वह निराश होकर भाग खड़ा हुआ।



अब चौथा दिन। बूढ़ा आदमी और उसका टट्टू एक नदी की बाढ़ में फंस गये। उस पर सूखी देवदार की लकड़ियों से एक पुल बना हुआ था। वे लकड़ी के पट्टे बहुत पुराने हो गये थे। टट्टू पर लदे भारी सामान और बूढ़े आदमी के वजन से वे टूट गिरे। दोनों नदी में जा गिरे और तेज बहाव में बह गये।



पहाड़ की चोटी पर बुढ़िया हर आते-जाते यात्री से पूछती रहती, ''क्या मेरे बुढ़ऊ और उसके टट्टू को तुमने देखा है?''

एक यात्री ने जवाब दिया, ''हां, देखा है। अभी-अभी वह एक नीचे खिसकती बर्फानी चट्टान में फंस गया था। लेकिन वह उससे साफ बच गया। एक खरोंच तक नहीं आई।''

दूसरे ने कहा, ''हां, देखा है। वह अभी-अभी काले भालू से लड़ा था और उसके नाखून-दांत दोनों उसने तोड़ दिये।''

तीसरे आदमी ने कहा, ''हाँ उसे देखा है। दर्रे से गुजरते कुछ पहले वह पहाड़ों को नमक का प्रसाद चढ़ा रहा था।''

तभी चौथा बोला, ''दर्रे से गुजरते मूसलाधार बारिश हो रही थी लेकिन वह ठीक-ठाक था और पानी की एक बूंद भी उसे छू नहीं पाई थी।''

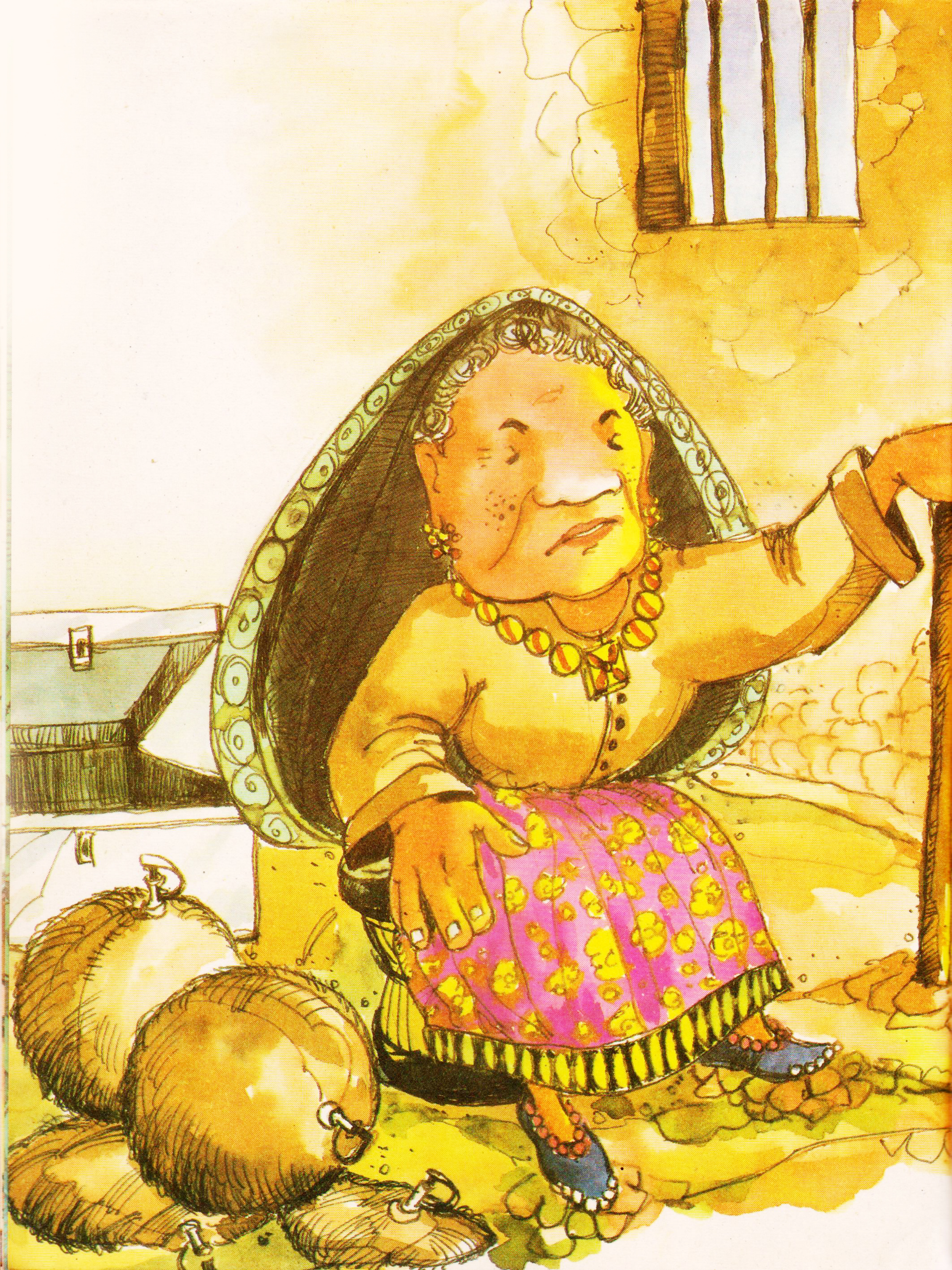






लेकिन वहां से गुजरते आखिरी यात्री ने कहा, ''नहीं, मैंने उन्हें नहीं देखा। लेकिन मैंने पुल में दो बड़े छेद देखे थे। एक छेद तुम्हारे बूढ़े आदमी के आकार का था, और दूसरा था उस टट्टू के आकार का।''



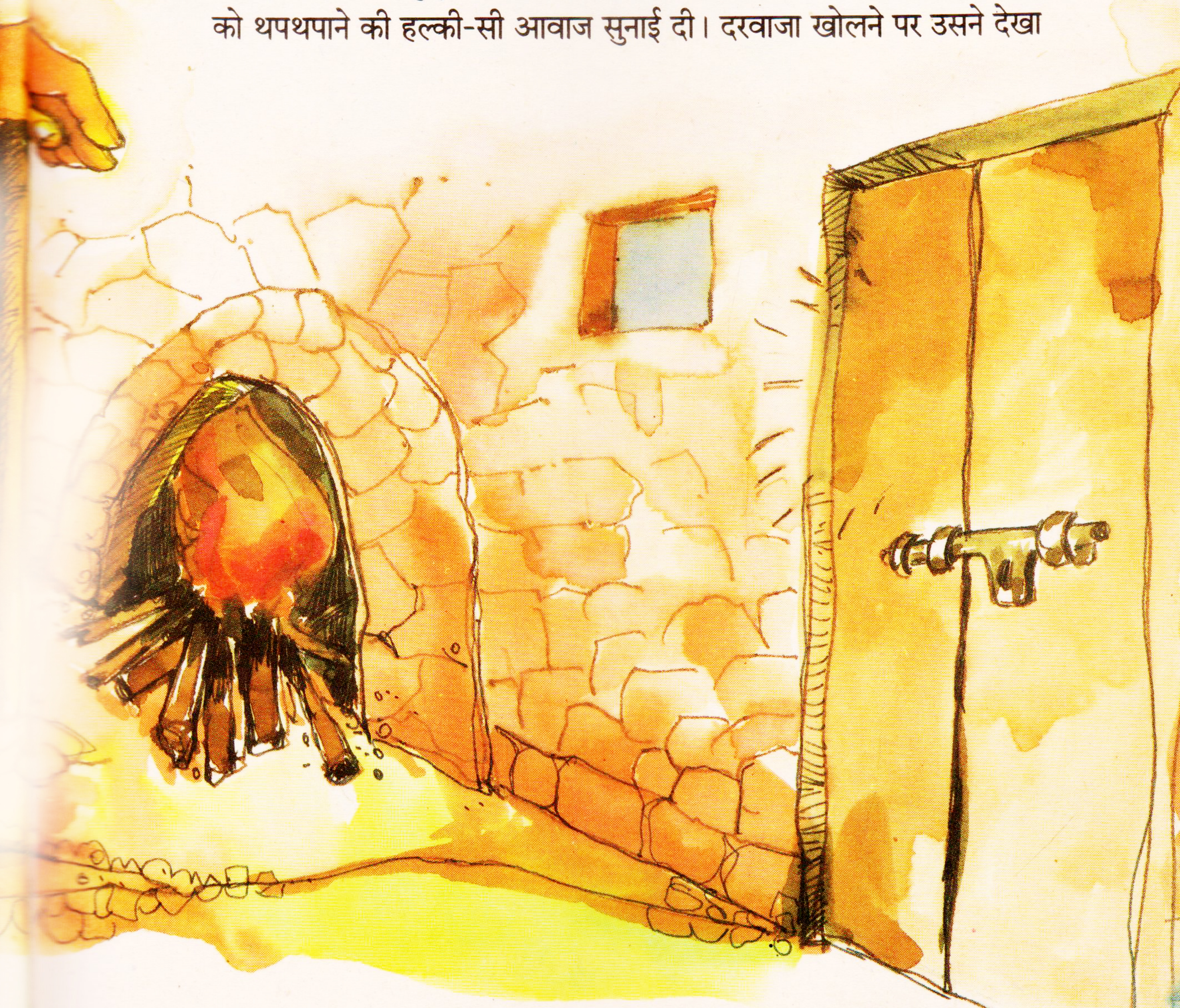


बुढ़िया रो दी, "हाय-हाय! यानी वे नदी में जा गिरे और उन्हें तैरना नहीं आता। हां, अब मुझे याद आया कि मैं उन्हें क्या देना भूल गई थी।"

बुढ़िया अंदर गई और भेड़ों की खाल से बने चार मशक लेकर आई जिनमें हवा भरी हुई थी, जिन्हें पकड़कर नदी पार की जा सकती थी। वह रोने लगी, "लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता, बहुत देर हो गई है।"

कई दिन बीत गये।

एक दिन जब बुढ़िया अलाव के पास बैठी आग ताप रही थी, उसे दरवाजे को थपथपाने की हल्की-सी आवाज सुनाई दी। दरवाजा खोलने पर उसने देखा







कि सामने खड़ा था उसका बूढ़ा—थका हुआ, भूखा और ठंड में ठिठुरता। उसे देखकर बुढ़िया खुशी से फूल उठी।

जब बूढ़े आदमी ने आराम कर लिया और खाना खा लिया तो उसने अपनी कहानी सुनाई, ''मेरी भारी वजन वाली गठरी नदी की दो चट्टानों के बीच अटक गयी। मैं वहीं फंसा रहता अगर दो गड़रियों ने मुझे बाहर नहीं निकाल लिया होता। लेकिन दुख है कि हमारा बूढ़ा टट्टू चल बसा।''

वह बोली, ''लेकिन इन मशकों के सहारे तो तुम आसानी से तैर सकते थे।''

''वाह, अगर तुमने इतना बोझ नहीं लाद दिया होता तो गिरते ही नहीं।''

''हां, हां,'' वह बोली, ''अगर मैंने इतना सामान तुम्हारे साथ नहीं दिया होता

तो तुम पुल पार भी नहीं जा पाते, समझे ? और वज़न इतना नहीं होता तो उन चट्टानों के बीच अटकते नहीं और बच भी नहीं सकते थे।''

और इस तरह वे इसी बात पर जीवन भर बहस करते रहे।

अब कोई सवाल नहीं उठता था कि पहाड़ की उतराई में जाकर भेड़ें खरीदकर लाई जायें। बूढ़े आदमी ने काफी लंबी यात्रा कर ली थी और अब वह गांव के बच्चों को ख़तरे से जूझनेवाली अपनी साहसिक यात्रा के बारे में किस्से सुनाया करता था।

''देखो बच्चों, चाचा जिगमे और भतीजे दोरजी दोनों से बड़ा हीरो हूं...'' वह आगे कहता, ''मैं कम से कम लौटकर तो आ गया हूं कि यह कहानी सुना सकूं। और भेड़ की खाल की मशकों में भरी हवा के बल पर बच जाना...हुँह, मुझे उनकी क्या जरूरत है ? बोलो बच्चों, मुझ जैसे आदमी के लिए क्या इनकी जरूरत थी ?''





न्यू टैक फोटोलिथोग्राफर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 095 द्वारा मुद्रित।

रु. 8.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

